धन-धर्म की रक्षा का उपाय

जो भारत वर्ष किसी समय धन दौलत की कान या सोने की चिड़िया कहलाये जाने का मान रखता था, और जिसके निवासी किसी समय सादा जीवन व्यतीत करते हुये स्वर्ग के समान सुख भोगते थे, आज वही भारत वर्ष हीनता, दरिद्रता, निर्धनता आदि के शिकंजे में जकड़ा हुआ दिखाई दे रहा है और इसके ग़रीब निवासी नर्क के समान दुःखों के शिकार बन रहे हैं यहां प्रश्न उठता है कि ऐसा क्यों हुआ ? क्या यहां की उपजाऊ भूमि बंजर होगई या पैदावारी में कुछ कमी आगई या इस देश के धनको कोई उठा कर लेगया ? अर्थात् वह बात क्या हुई कि जिसके कारण यहां के स्वर्गीय सुख, नारकीय दुःखों के रूप में पलटा खागये। उत्तर में कहना पड़ता है कि इस देश की पैदावारी यदि इस देश के ही काम आती, तो शायद आज महंगी और दुर्भिक्षका सवाल गरीब लोगों की ज़बान पर न आता और भारतवासी निर्धनता की चक्की में दरेड़े हुये दिखाई न देते। परन्तु यह बात नहीं है। यहां की पैदावारी को विदेशों के व्यापारी दोनों हाथों से भर २ कर अपने देशों को

ले जा रहे हैं। गेहूं, चना, जौ, चांवल, तिल, सन, सरसों, कपास, रुई, अर्थात् तमाम चीज़ें दूसरे देशों की मंडियों में जा जा कर बिक रही हैं। यहां के व्यापारीनुमा दलाल केवल कुछ कौड़ियों की दलाली (कमीशन) पर अपने देश भाईयों के खाने पहनने की सामग्री विदेशी व्यापारियों को दे रहे हैं। इसही कारण से भारत वर्ष में अकाल महँगी, निर्धनता, अपनी भयंकर सूरत को लिये हमेशा खड़े हुये दिखाई देते हैं और देश के सपूतों को काल का ग्रास बनाकर मृत्यु की गोद में सुलाते हैं।

दुःख की बात तो यह है कि जो चीज़ें यहां से विदेशों को जाती हैं उनके बदले में जो कीमत मिलती है वह कीमत भी यहां पर नहीं रहती; बल्कि वह कीमत अपने से बहुत कुछ अधिक साथ लेकर जहां से आती है वहीं चली जाती है। यहां से जो चीजें एक रुपये के बदले में जाती है वहां से वह चीज किसी दूसरे रूप में दस बीस ही नहीं बल्कि इससे भी अधिक मूल्य की बनकर आती है। सेर डेढ़ सेर रुई जो एक रुपये में यहां से जाती है वही रुई बारीक मलमल बनकर बीस २ रुपये में हमारे हाथों बिक जाती है। भारत वर्ष के दीन और श्रम जीवी किसानों को उनकी मेहनत का फल यदि किसी चीज के बदले एक रुपया मिलता है तो दूसरे देशों के कारीगरों को उनकी कारीगरी का फल उसही चीज़ के बदले बीस पचीस

रुपया मिलता है। या अगर हम किसी चीज का दाम दूसरे देश वालों से एक रुपया वसूल करते हैं तो उस अपनी ही चीज़ का दाम उसके दूसरा रूप धारण कर लेने पर बीस पच्चीस रुपये खुशी के साथ दे डालते हैं। इससे आप ही अनुमान लगा सक्ते हैं कि हमारा धन कहां जारहा है, क्यों जा रहा है और किस प्रकार जा रहा है।

आज यह भी देखने में आ रहा है कि जिन घरों में आवश्यक वस्तुयें अपने ही देश की बनी हुई होती थीं उन घरों में आवश्यक वस्तुयें कुछ भी नहीं हैं परन्तु फ़ालतू सामान बहुत कुछ मौजूद है और तो क्या आप अपने घरों में, गली मुहल्लों में, एक नजर डालकर देख जाइये कि आटा पीसने की चक्की कितनी चल रही हैं और कितनी देवियें चक्की के द्वारा व्यायाम (कसरत) करती हुई और आटा पीसती हुई दिखाई दे रही हैं। हमारी राय में तो बहुत ही कम चक्कियां नजर आयेंगी। इन स्वदेशी चक्कियों को बन्द किया है आटा पीसने के एंजिनों और मैशीनों ने। आज बड़े बड़े शहरों में ही नहीं बल्कि छोटे २ क़स्बों तक में भी आटा पीसने के एंजिन चल रहे हैं और तमाम शहर के लिये आटा पीस कर भारत की देवियों को सुख भोगी, आलसी, और चिर्चल बना रहे हैं। इसही प्रकार तेल निकालने, रस पीलने, कपास ओटने, सूत कातने, धन कूटने, और कपड़ा बुनने,

तक का काम मैशीनों से लिया जा रहा है जिससे देश के तेली जुलाहे, बढ़ई, लुहार, और दूसरे कारीगर और श्रम-जीवी लोग भूखों मर रहे हैं और इस उद्यमशील पुरुषार्थी देश में आलस्य, सुस्ती, और निर्बलता ने घर बनालिया है।

इन इंजिनों और मैशीनों के बदले जो रुपया भारतवर्ष से दूसरे देशों को जा रहा है वह तो रहा जुदा पर वे कारीगर और मेहनती लोग जो तेल निकालने के कोल्हू, रसपीलने और कपास ओटने की चरखी, सूत कातने के चरखे, धान कूटने के ओखली मूसल, और कपड़ा बुनने के करघे, बनाकर अपना जीवन निर्वाह करते थे बेकारी के कारण हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं और रोटी के एक २ टुकड़े को तरसते हैं। यह इन लोगों की बेकारी और भूख का ही परिणाम है कि जिस देश के लोग खुले कपाट सोते थे वहां चोरी पेशा लोग बढ़ गये और सर्कारी जेलों में जाकर दिन व्यतीत करने लगे।

दूसरे देशों से केवल इंजिन और मैशीन ही नहीं आईं बल्कि वहां से खाने पीने व अन्य दूसरे वर्तन के सामान (अर्थात्) चीनी और कांच के बर्तन, टीन और हाड़ के खिलौने, तेल और चर्बी का साबुन, गाजर और मूली की शक्कर, हमारे दिये हुये अनाज की रोटियां और बिसकुट, हमारी रुई से बने हुये भांति २ के कपड़े, मोटर, साइकिल

घड़ी, छड़ी, छाता, टोपी, मौज़ा, बनियान, फोट्, फ़ोनू, भाड़फानूस, लैम्प, लटकन, भांति २ की औषधियां भी आई जिनके मूल्य का हमने इतना धन दिया कि हम को बहुत कुछ पैदा करते हुये भी निर्धन बन जाना पड़ा। आज हम दूसरी अनावश्यक वस्तुओं के विषय में कुछ न कह कर केवल कपड़े के ही सवाल को उठाते हैं जिसके बारे में कहा जाता है कि भारत वर्ष से दूसरे देशों को अनुमान साठ करोड़ रुपया केवल कपड़े की खरीदारी के लिये ही जाता है। यद्यपि ऐसा कहना सर्वथा सत्य ही है परन्तु जब ३३ करोड़ मनुष्यों के कपड़ों पर नज़र डाली जाती है तो एक मनुष्य पीछे १०) रु. के हिसाब से (जोकि बहुत ही कम है) तीन अरब से भी अधिक रुपया होता है। खैर कुछ भी हो भारत वर्ष के लिये तो ६० करोड़ रुपया भी, बहुत ज्यादा है। जब कि इतना रुपया प्रत्येक वर्ष विदेशों को जाता है तब इस देश को निर्धन और भूखा बनाने के लिये और किन बातों की आवश्यक्ता है?

इस समय प्राचीन काल की बातों को दुहराकर आपका समय लेना मंजूर नहीं है परन्तु इतना कह देना अवश्यक है कि हमारे देश में बारीक से बारीक और अच्छे से अच्छा कपड़ा तैयार होता था, जो यहां की आवश्यक्ताओं को पूरी करके

दूसरे देशों तक में जाता था। परन्तु अब हम कपड़े के लिये दूसरे देशों के मुहताज बन गये हैं और हम को ग़ैरों के हाथों की तरफ को देखना पड़ रहा है। हमारे देश का हाथों से बुना हुआ कपड़ा हमारे शरीरों पर बोझ मालूम देने लगा है। मोटे कपड़े की धोती और मोटे खद्दर की चादर, कुरते के बोझ से शरीर के झुक जाने का भय लगने लगा है। आज हमारे फैशनेबिल मित्रों के बक्स विदेशी कपड़ों से भरे पड़े हैं। घरकी पूज्य देवियों के शरीरों पर दूर देशों की चमकीली भड़कीली रंगीली और रेशम के चिकने सूत की साड़ियां और धोतियां नजर आरही हैं। बिना आवश्यक्ता के टाई, कालर, आदि सामान ने हमारी पाकेट का पैसा दूसरों के हाथों में पहुंचा दिया है, और हमको निर्धन बना दिया है।

सिवाय इसके विदेशी कपड़ों के कारण हमारे धर्म के ऊपर भी चोट पहुंच रही है जब कि हमारे देश का कपड़ा बनाने वाली मिलों में लाखों मन चर्वी काम में लाई जाती है तब विदेशी कपड़े शुद्ध और पवित्र कैसे कहे जा सकते हैं। चर्वी लगा कपड़ा विदेशी हो या स्वदेशी (मिलों का) वह किसी भी धार्मिक पुरुष के पहिनने योग्य नहीं हैं। चर्वी किस जानवर का है भला यह निर्णय किसने किया हैं चर्वी की वजह से प्रत्येक हिन्दू मुसल्मान के लिये ऐसे कपड़े त्यागने

योग्य हैं और फिर उन लोगों का तो कहना ही क्या है कि जो अहिंसा को परम धर्म मानते हैं। उनको तो चर्बी लगे कपड़े भूलकर भी न पहनने चाहियें। देव पूजा, संध्या, वन्दन, सामायक, नवाज़, बंदगी, या अन्य धार्मिक क्रियाओं के करते समय ऐसे अपवित्र और अशुद्ध वस्त्रों का काम में लाना बड़ा भारी पाप है। हमको यह देख कर दुख होता है कि जो जैनी लोग चलते फिरते जीवों पर ही नहीं बल्कि साग सब्जी (वनस्पति) तक पर दया करते हैं और उनको बिदून आवश्यक्ता के काम में लाना पाप समझते हैं वे भी ऐसे अपवित्र और हिंसासे भरे हुये कपड़ों को काम में लाते हैं और यहां तक काम में लाते हैं कि अपने घरों के अतिरिक्त देव मंदिरों तक में चर्बी लगे कपड़े चढ़ाते हैं, उनको पहन कर पूजा करते हैं, शास्त्र पढ़ते हैं, वीरवाणी को लपेटते हैं और अपने इष्ट देव की पूज्य प्रतिमाओं का नव्हन करके उनसे पोंछते हैं। हमारे हिन्दू भाई भी ठाकुरजी की मूर्तियों को ऐसे ही कपड़े पहना कर खुश होते हैं। यह कितने बड़े दुःख की बात है। इन विदेशी और मिलों के कपड़ों ने जहां हमारी खून पसीना बहाई कमाई को दूसरों के हाथों में पहुंचाया है वहां हमारे ईमान धर्म को भी आघात पहुंचाने में कोई कमी नहीं छोड़ी।

धर्म के मानने वाले, अहिंसा के प्रेमी, और पवित्रता के इच्छुक चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान, आर्य हों या सिक्ख, जैनी हों या बौद्ध, कोई भी क्यों न हों उनको देव मन्दिरों में तो क्या अपने घरों तक में भी ऐसे अपवित्र, और हिंसामई कपड़ों को काम में नहीं लाना चाहिये।

आज देश की निर्धनता-दीनता-दरिद्रता पर तरस खाकर और धर्म, ईमान, की सफाई होती देख कर देश के शुभचिंतक नेता यही आवाज़ लगारहे हैं कि "भाई देश वालो सम्भलो अपने घरों में चर्खे चलवाकर सूत कतवाओ, अपने पास पड़ोस के जुलाहों से कपड़े बुनवाकर पहनो, और अपने देश को सम्पत्ति शाली और खुश हाल बनाओ, तुम्हारे ऐसा करने से तुम्हारी पैदा की हुई कपास तुम्हारे ही हाथों से निकल कर तमाम आवश्यक्तायें पूरी कर देगा, तुम्हारा करोड़ों रुपया जो विदेशी लोग तुमसे हंस खेल कर लेजाते हैं वह न ले जा सकेंगे, जिससे तुम्हारे देश की आर्थिक दशा ठीक हो जायगी, और वर्तमान दरिद्रता दूर होकर तुम्हारे लिये अच्छे दिन आजायँगे।

नेताओं का यह कहना सर्वथा ठीक है और यह ही हमारे सुधार का सीधा मार्ग है। इस मार्ग में कोई रुकावट नहीं

है क्योंकि अपने घर का प्रबंध करना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है। जब हम यह देख रहे हैं कि विदेशी कपड़े के कारण हमारे खून पसीना बहाई कमाई का टका हमारी पाकिटों से निकल कर दूसरों की पाकिटों में जा रहा है तब क्यों न हम अपने टकों की रक्षा करें, क्यों न उनको अपनायें और क्यों न अपनी वर्तमान दरिद्रता को दूर कर के अपनी आर्थिक दशा का सुधार करें।

भाई देश वालो,आज तुम्हारा सच्चा शुभचिंतक (पूज्य महात्मा गांधी) तुमको आदेश करता है कि ऐ-भारतमाता के सुपुत्रो आवो, आवो, आगे आवो. स्वार्थ, हिंसा, और बनावट का बलिदान करने पर तैयार हो जाओ। यद्यपि इच्छित स्थान देखने में कठिन और दूर है परन्तु लेने में बहुत ही सुगम है। यह चट्टानें और खाई खंदकें जो दीख रहीं हैं बिल्कुल धोका है। जरा साहस और गम्भीरता से काम लो, अमन और शांति के साथ आगे बढ़ो। फिर इच्छित स्थान पर सफलता के साथ पहुंचे नजर आओगे। देखो भाई बहादुर सिपाहियों! स्वदेशभक्ति केवल कहने ही के लिये नहीं है, स्वदेशी के गीत केवल गाने के ही लिये नहीं हैं, बल्कि इन पर अमल करने की आवश्यक्ता है जो विदेशी सामान और कपड़ा तुम्हारे धन को चाटने का,तुम्हारे देश भाईयों को निर्धन

बना कर भूखा मारने का, और तुमको आलसी, निरुद्यमी, निरुत्साही, और बनावट पसंद बनाने का कारण हो रहा है उससे परहेज करो और उसका पहनना छोड़ो। उसके अंदर दरिद्रता और निर्धनता के परमाणु भरे हुये हैं जो देश को अधोगति में पहुंचाने का कारण हो रहे हैं।

भाई लोगों अपने घरों में चर्खे चलवाओ सूत कतवाओ और फिर उसका खद्दर बुनवाकर काम में लाओ अपनी चीज चाहें कैसी भी क्यों न हो आखीर तो अपनी ही है अपनी चीज़ को काम में लाने से अपना पैसा बचेगा धर्म की रक्षा होगी देश की दरिद्रता दूर होकर खुश हाली का दर्शन होगा।

पूज्य नेता का आदेश सर्वथा ठीक है। ऐसा करना प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य है। चूंकि यह हमने घर का प्रबंध है, इस लिये कोई पाप नहीं है। यदि कोई व्यर्थ व्ययी मनुष्य अपने ख़र्चों को घटाकर और मितव्ययता से रुपया बचा कर अपने साहूकार का (जिससे रुपया उधार लेकर व्यर्थ व्यय किया करता था और सूद पर सूद देकर मूल धन से भी कई गुणा जियादह दिया करता था) हिसाब चुकता करके आगामी को उधार लेने से इंकार करता है तो क्या बुरा करता है इससे साहूकार को क्या अधिकार है कि उसको जबरदस्ती के साथ

उधार लेने पर बाध्य करें वह ऐसा कदापि नहीं कर सक्ता। फिर जबकि तुम अपने धन धर्म की रक्षार्थ विदेशी वस्तुओं का त्याग करके अपने देश की बुरी भली वस्तुओं को काम में लाओगे तब तुम्हारे इस प्रबंध में कोई भी रुकावट नहीं पड़ सकती और कोई भी ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं कर सक्ता। परन्तु भाई लोगो, जररूत है स्वयं अपने आपको तैयार कर लेने की अपने देश का हाथ से बुना हुआ कपड़ा पहनो उससे और उसके भद्दपन या मोटे और खुरदरेपन से घृणा न करो। जब हमारे शरीरों पर हमारा ही कपड़ा होगा तब इससे अधिक सुन्दरता और क्या होगी। दूसरों के मुहताज न बनो। अपनी मेहनत के पैसे को संभाल कर रखो और सादगी के साथ जीवन व्यतीत करो।

देश का बुना हुआ मोटा झोटा खद्दर तुम्हारी भलाई का कारण है, तुम्हारी गिरी पड़ी दशा को सुधारने का गूढ़ मंत्र है और दरिद्रता के रोग को दूर करने के लिये राम बाण औषधि है। अब यदि ज़रुरत है तो केवल ऐसा नियम धारण करलेने की है कि "हम अपने देश की वर्तमान दशा को सुधारने और अपने धन धर्म की रक्षा करने के लिये अपने देश की बनी हुई वस्तुयें काम में लायँगे।"

देश के नवयुवाओ देश की आंखें तुम्हारी ओर लगी

हुई हैं देश की आशाओं के सहारे तुम ही हो। क्या तुमने इस पर कभी ध्यान दिया है? यदि दिया है तो क्या तुमने फैशन की गुलामी से स्वतंत्र होकर देश क भूखे भाईयों को पेट भर कर रोटी न खिलाओगे, और अपने पूज्य धर्म की रक्षा न करोगे ? भाई नवयुवको जब तक तुम्हारे गलों में टाई कालर का फंदा पड़ा हुआ है जब तक तुम फैशन के घोड़े पर सवार हो, भाई इस हठीले घोड़े से उतरो देश को उठाओ छाती से लगाओ तब तुम देश के सच्चे सपूत समझे जाओगे।

तुम लोग फैशन पर मतवाले बने हुये हो और अपनी निर्बलता के कारण मोटे खद्दर से घबराते हो यह बात तो ठीक नहीं है। जब कि तुम पुरुष हो तो पुरुषत्व की बातें करो। वह पुरुष क्या जो अपनी दशा ठीक करने क लिये सादगी से घबराये और सादा खाने पहिनने से जी चुराये।

पूज्य देवियो! अपने घर की बातें तुम सब जानती हो अब सचेत हो जाओ बहुत दिनों तक भूल भुलैयां में पड़ी रहीं और अपने शरीर को अपवित्र अशुद्ध और हिंसा भरे विदेशी और रेशमी कपड़ों से अपवित्र करती रहीं और खुश होती रहीं। देखो देवियो! चर्बी लगे कपड़े तुम्हारे धर्म का घात करते हैं, तुम व्रत करती हो उपवास रखती हो और देव

मंदिरों में जाती हो परन्तु तुम्हारे शरीरों पर अशुद्ध और अहिंसा से भरे कपड़े अवश्य रहते हैं। अब तुम्हीं सोचो कि तुम्हारी धार्मिक क्रियायें ऐसी दशा में कहां तक सफल हो सक्ती हैं।

जिस रेशमकी उत्पत्ति असंख्यात कीड़ों को खौलते हुये पानी में उबालकर होती है क्या वे वस्त्र तुम जैसी धार्मिक देवियों को पहनने उचित हैं। इस विषय पर तुम स्वयं ही विचार कर सक्ती हो तुम गृहस्थ सम्बन्धी धार्मिक और लौकिक सब क्रियाओं को अपने पवित्र हाथों से करती हो परन्तु इन अशुद्ध वस्त्रों ने उस तुम्हारी पवित्रता में बट्टा लगा रखा है।

रसोई जैसी खान पान की शुद्ध क्रिया भी चर्बी लगे कपड़े पहन कर बनाती हो। क्या यह बुद्धि को भ्रष्ट और धर्म को नष्ट करनेवाला कार्य नहीं है? देवियो अब ऐसा मत करो, अबतो चर्खा चलाने का समय आगया है। चर्खा तुम्हारी भलाई का कारण है, स्वास्थ रक्षा का ठेकेदार है और तुमको हृष्ट पुष्ट बनाने का साधन है। तुम्हारे हाथ का कता सूत सोने का तार है, उसका बुनाहुआ खद्दर विदेशों की बारीक मलमलों, चिकनों, डोरियों, और रेशमी वस्त्रों से हजारों दर्जे अच्छा है। तुम चटकीले और भड़कीले कपड़ों से परहेज करो, वे अशुद्ध हैं और अपवित्र हैं। उनके कारण कितने ही जीवों के प्राणों

की आहुति दी जाती है, इसलिये तुम अपने हाथ का कता सूत और गांव के जुलाहे का बुना कपड़ा काम में लाओ इस कपड़े की साड़ी जो जंगली फूलों के शुद्ध रंग से रंगी हुई होगी वह तुम्हारे शरीर को शोभायमान बना देगी।

पूज्य देवियो तुम शक्तिवान हो, तुम धर्म के लिये देश के लिये मान मर्यादा के लिये आत्म गौरव के लिये और अपने सत्य की रक्षा के लिये प्राण तक त्याग देती हो। फिर यहां तो केवल बनावट के ही त्याग देने की प्रार्थना है। देवियो आश्चर्य की बात है कि तुम्हारे सौभाग्य का चिन्ह अर्थात् चुड़ियां भी विदेशी हैं। सौभाग्य का चिन्ह तो अपने घरों का होना चाहिये। क्या उसके लिये भी गैरों का मुंह ताकें। इसलिये पूज्य देवियो! तुमको नियम लेना चाहिये कि हम अपने ही देश की बनी हुई वस्तुयें काम में लायेंगी।

भाई धनवान लोगो और कौड़ियों के बदले देश में मंहगाई पैदा करने वाले कमीशन एजेन्टो याद रक्खो, तुम्हारी धनाढ्यता और मान्यता उसही समय तक बनी हुई है कि जब तक देश की सत्ता कायम है, यदि देश की वर्तमान दशा कुछ और दिनों तक न सुधरी तो फिर तुम अपनी धनाढ्यता और मान्यता को स्वयं ही बैठे परखा करना। देश की निर्धनता,

दरिद्रता और मुसीबतों का तुमको जराभी ख़्याल नहीं है। क्या तुम देश से जुदा हो, क्या देश तुम्हारा नहीं है, क्या देश के दुःखी लोग देश के सम्बन्ध से तुम्हारे भाई नहीं हैं और क्या देश के अन्न जल से तुम्हारा पालन पोषण नहीं हुआ है? नहीं भाई, यह बातें नहीं हैं। बल्कि देश तुम्हारा है और तुम देश के हो। इसलिये तुम्हारें दिलों में देश के प्रति अवश्य प्रेम होना चाहिये। ऐसा कहने से हमारा यह प्रयोजन नहीं है कि तुम कमीशन एजेन्टी छोड़दो या धनाढ्यपन से उदासीन हो जाओ। नहीं कदापि नहीं, ऐसा कहना तो महान् पाप है, बल्कि हमतो यह कहते हैं कि तुम देश की आवश्यक्ताओं को पूरी करने का बीड़ा उठाओ। यहां की पैदा की हुई वस्तुओं को यहां की आवश्यक्तानुसार रख कर दूसरे देशवालों को दो, उसमें भर पूर कमीशन लो, अपने धन का सदुपयोग करो, देश के लिये आवश्यक वस्तुयें बनाने का प्रयत्न करो ऐसा करने से देश भाईयों को लाभ होगा, तुम्हारा धन, धर्म, और जीवन सफल होगा और तुम देश के उच्च मनुष्यों में समझे जाओगे।

करो पूजन स्वदेशी का।

(ले०—स्वामी नारायण नन्दजी)

तुम्हें आव्हान करता है, स्वदेशीपन, स्वदेशी का,
स्वदेशी वीर वर आओ, करो पूजन स्वदेशी का !
ध्वजा ध्रुव कीर्तिकी, आकाश में फहरा रही, उनकी,
जिन्हों ने जन्म पा जगमें, निवाहा प्रन स्वदेशी का !
थे गुरू पूर्वज तुम्हारे, मान पाते थे, गुणज्ञों में,
रहे आजन्म सुखदायी, वो कर सेवन स्वदेशी का !
तपो बल से तपस्वी हो, मनस्वी आत्म संयम से,
बने वह विश्व विजयी, जिसमें हो, जीवन स्वदेशी का !
पलेहो गोद में जिसकी, पिया है दूध जिस मां का,
बचालो लाज उसकी, यज्ञ रच पावन स्वदेशी का !
स्वदेशी के हो अर्पण हवि, स्वदेशी शुभ, स्वदेशी से,
दो आहुति प्रेमकी, कर मंत्र उच्चारण स्वदेशी का !
उचित है तुम को तन मन धन से, सेवा देश की करनी,
चढ़ा दो बलि विदेशी की, तो हो अर्चन स्वदेशी का !
विदेशी तेज हत होंगे, वो हम में शक्ति आयेगी,
हृदय में भक्ति आयेगी, ये है तर्पन स्वदेशी का !
विजय हो प्राप्त तुमको, युद्ध में देशी के 'नारायण',
तुम्हारे हाथ में यदि शस्त्र हो साधन स्वदेशी का !

स्वामी नारायण नन्द—अख्तर।